63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

63-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2025 ജനുവരി 4 മുതൽ 8 വരെ തിരുവനന്തപുരം

Item Code: 642 Participant Code: 304

HS: हिन्दी कथा रचना

मुझे भी है एक सपना

"माँ, पापा आप दोनों कहा हो? देखो न मैं क्या लाया हूँ।" स्कूल से आते ही किरण चिल्लाने लगा। जल्दी ही माँ काम सब छोड़कर आ गई। "क्या है बेटा किरण क्या बात है?" "तुम्हे पता है आज मेरा परिक्षा था। देखो मेरे अच्छे मार्क आये है। पीछे किरण ~~की~~ के बहन शैना खड़ी थी। पर शैना अपनी पेपर दिखा ~~रही~~ नही रही थी। माँ को लगा उसने अच्छे से नही लिखा होगा। माँ शैना से पूछने वाली ही थी तब किरण और शैना के पिता आ गया। पापा को देखते ही शैना अंदर चली गई। इसका एक कारण है की शैना पापा शैना को पसंद नही करती क्युकि वह एक लड़की है। शैना को देखना भी वह पसंद नही करता। इस बात से शैना बहुत दुखी है। "बेटा शैना क्या बात है तुम मुझे पेपर क्यु नही दिखाई।" शैना के कमरे में आकर माँ बोली। "नही माँ कुछ खास नही

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

है। तुम जाओ।" ऐसे कहते हुअे रीना सोने की नाटक की। माँ कमरे से बाहर जाने की बाद रीना सोचने लगी। "क्या मैं इतनी बुरी हू क्या? मेरे पापा मुझे थोडा भी पसंद नही करता पर किरण को वह बहुत पसंद करता है। वह कहता है की मैं लडकी हूँ। मुझे भी पढना है। पर कितना भी पढू कोई देखता भी नही है। क्या फयदा।" न जाने रीना की आखें भर आई। ऐसे सोचते-सोचते रीना सो गई। रीना के सोने की बाद माँ चुपचाप रीना की कमरे में आकर उसकी पेपर निकाला तो उसमें रीना को किरण से भी अच्छे ~~मार्क~~ मार्कि आये थे। रीना उसे न दिखाने की कारण वह जानती थी। रीना के पापा उसे पढने लिखने का भी हक नही दिया है फिर भी माँ की बात पर ही वह स्कूल जाता है। रीना पढने में बहुत अच्छी है सब माँ जानता था। रीना की पेपर देखते समय अचानक रीना के पिता वहा आ गया और वह पेपर देखा। किरण

से भी अच्छे मार्क रीना को मिलते देखकर रीना के पिता को अच्छा नहीं लगा। और वह चिल्लाने लगा। यह सुनकर रीना नींद से उठा और यह सब देखकर रोने लगा। उसके पिता उसे बहुत मारा और कहा "आज से तुम पढने नहीं जाओगे। लड़कियाँ घर में बैठना चाहिए। उन्हे पढने का कोई हक नहीं है। देखो तुम्हारी माँ को"। यह सब सुनकर रीना रोने लगी। "पापा ऐसा मत कहो। मुझे भी पढना है। किरण की तरह मुझे भी एक सपना है। मैं भी आपकी बेटी ही हूँ।" इतना सब कहने के बाद भी रीना के पापा नहीं माना। "तुम चुप रहो"। ऐसा बोलकर वह चला गया। उस रात रीना रोता ही रहा। उसका एक बहुत बड़ा सपना था की एक कलक्टर बनना। पर आज उसका सब कुछ चला गया था। आज उसे लगा की उसका सपना ही व्यर्थ है। उसकी सब प्रतीक्षा पानी में मिल गया था।

जब भी रीना मौका मिलता है तो पढ़ने की कोशिश करता है। उसका सपना उससे ऐसा करवाता है। रीना के पापा उसे घरों में काम करवाने केलिए भेजता था। जिस घर वह काम केलिए जाती है वहा उसे उस घर का मालिक बहुत सी किताब देती है। सब किताबे रीना पढ़ती भी है। यह सब बात और कोई नही जानता था। यह बात रीना की पापा को पता चला तो वह रीना को मार देंगे। एक दिन काम करनेवाले घर में बैठकर किताब पढ़ रहा था तो उसकी पिता वहा आता है और रीना को पढ़ते देखता है। उस समय उसके पापा उसे बहुत गुस्सा होकर देखता है और वापस चला जाता है। रीना बहुत डर गई थी। अब रीना वापस घर गया तो उसके पापा उसे बहुत मारूगा। इसलिए वापस जाने केलिए वह डरता है। रीना काम करनेवाले घर से निकला। उसे घर जाने का बहादुरी नही था। कहा जा रही है नही पता, अब क्या होगा वो भी नही पता। रीना उस रात

अकेले सड़क पर चलता रहा। रीना बहुत डरा हुआ है। चलते-चलते उसकी पैर तक गई थी। अचानक एक कार उसकी सामने आकर रुकता है। उस कार से रीना काम करनेवाली घर का मालिक का बेटा आता है और रीना से पूछता है "तुम्हे क्या हुआ? यहा क्यु खडी हो? घर नही जाना। आजा मैं घर छोडती हूँ।" "नही मैं नही आ रहा। मुझे डर लगता है। मेरे पापा मुझे मारेंगे।" रीना डरते हुओ कहा। "पापा तुम्हे क्यु मारेगा? तुमने क्या किया है"। रीना ने सब बात उन्से बताया। यह सब सुनते ही उसने रीना से कहा "मैं तुम्हारी सपना पूरा करने में मदद करुगी तुम चिन्ता मत करो"। पर इन सब बातों की पीछे उसका बुरा चहरा था। पर बेचारी रीना यह समज नही पाया और उसका विशवास करते हुऐ उसके साथ चला गया। "घर पहुच गया। आओ"। "पर यह तो वह घर नही हेना। रीना बोली। "तुम फिकर मत करो माँ ने देखा तो वह तुम्हे वहा रहने नही देगी।"

जब रीना कपड़ा बदलने केलिए कमरे में जाता है तो मालिक का बेटा भी उसके पीछे जाता है और दरवाजा बन्द करता है। रीना को सब समझ आ गई थी बीचारी चिल्लाई पर कोई नही सुना। जलदी ही रीना ने एक लकड़ी उठाकर उसे मार कर वहा से भाग आई। सड़क से वह तेज़ी से भागी। भागते समय तेजी से कार आकर उसे टक्कर मार दी। यह देखते ही लोगो ने रीना को असपताल ले गया। पर न जाने भगवान उसका एक पैर ले गया था। अब वह चल नही सकती। असपताल वालों ने उसकी पापा को बताया फिर भी वह देखने तक नही आया। अब रीना एक अनाद्र बन गई थी। कोई उसे ले जाने केलिए नही है इसलिए वह असपताल की ही एक ओरफनेज में रहना शुरु किया। वहा की सब लोग रीना के सपने के साथ था। इसलिए वह अनाद्र महसूस नही करती थी।

आज वह पढकर एक कलक्टर बन गई
थी उसका सपना पूरा हुआ। आज उसके पिता
की सामने सिर उठाकर स्टेज पर खडी है। ~~आप~~
व कलेक्टर का प्रभाषण चल रहा है थानी रीना
की। "मेरा सपना आज पूरा हुआ। बड़ी महेनत
करके ही यहा व पहुंचा हूँ। बहुत सी मुशकिलो
का सामना किया है। आप सब देख सकता है
की आज भी मैं चल नही सकता पर भी मैं
खुश हूँ। एक और खास बात है आज मेरा
एक किताब जो मेने लिखा है उसका प्रदरशन
करना है। मेरी जीवन यात्रा आपक सबको बताने
केलिए। आज मैं यहा रुका हूँ तो उसका एक
ही कारण है 'मुझे भी था एक सपना जो आज
मेरे हाथ में है।'"